सत्यमेव जयते

जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

save water

जल चर्चा

JULY-2020

5 Tips on COVID-19

Prevention Before You Step Out

WE WANT YOU SAFE

Rub soap for 20 seconds.
Don't run the tap
for 20 seconds.

FIGHT CORONAVIRUS SAVE WATER

CONTENTS

- मुख्य संपादक की कलम से — 2
- पन्ना मीना का कुंड — 3
- चंबल नदी — 4
- Conservation (MGNREGA) — 5
- मन की बात — 6
- नदी पुनरुद्धार - घरार नदी — 7
- PMKSY — 8
- जल योद्धा — 9
- 14th Water Talk — 10
- ओंकारेश्वर बांध — 11
- People's Initiative — 12-13
- Namami Gange — 14-16
- Know Zone — 17
- News In Brief — 18-21
- Snippets — 22-23
- जन की बात — 24
- NGO — 25
- जल जीवन हरियाली — 26
- In Newspaper — 27
- Institute — 28

3 पन्ना मीना का कुंड

4 चंबल नदी

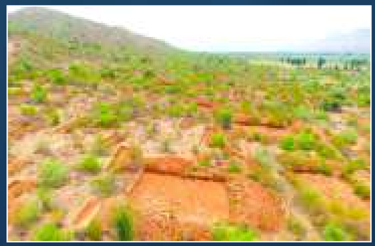

5 Conservation (MGNREGA)

7 नदी पुनरुद्धार - घरार नदी

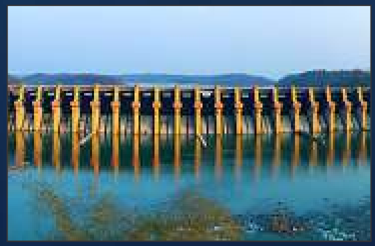

11 ओंकारेश्वर बांध

14-16 Namami Gange

25 NGO

28 INSTITUTE

Chief Editor : U.P. Singh
Editor : Nitishwar Kumar
Co-Editor : Girraj Goyal
Sub - Editor : Mohit Sharma
Design & Comm. Team : Fusion Corporate Solutions Pvt. Ltd.
Photographer : Arvind Singh Tomar
Publisher : B.H.T. Vaiphei
[as Under Secretary (IEC), Ministry of Jal Shakti, Do WR, RD & GR
Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi -110001]
Printer : Krishna Enterprises
2070/5, Chuna Mandi, Paharganj, New Delhi - 110055

Reproduction in any form is prohibited without written permission. Any dispute related to the content of the magazine should be addressed to the publisher.

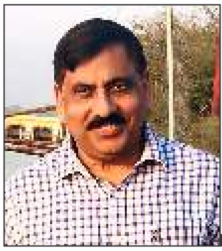

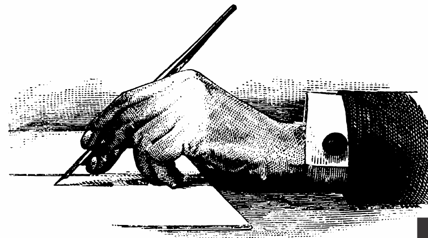

मुख्य संपादक की कलम से....

मैं इस तथ्य से परिचित हूँ कि देश में कोरोना महामारी अभी भी गंभीर समस्या बनी हुई है लेकिन मैं आशा करता हूं कि आप अपने घरों में स्वस्थ व सकुशल होंगे।

देशभर में प्रकृति के सबसे सुंदर मौसम मानसून का आगमन हो चुका है। इस मौसम में केवल प्रकृति का निखरा हुआ रूप ही देखने को नहीं मिलता बल्कि बारिश की फुहारें उन कृषकों के लिए प्रसन्नता की फुहारें बनकर आती हैं जिनके लिए वर्षा आजीविका के अभिन्न अंगों में से एक है। इस सुंदर मौसम को सभी अपने प्रिय जनों के साथ व्यतीत करना चाहते हैं परंतु इस बीच हमें अपने कर्तव्य और दायित्व को भी नहीं भूलना चाहिए और हर संभव तरीके से जल संरक्षण करने का प्रयास करना चाहिए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देशवासियों को जल के महत्व से परिचित कराने के लिए 28 जून को प्रसारित हुए मन की बात कार्यक्रम में गुजरात के एक अभियान का उदाहरण दिया जिसके अंतर्गत बड़ौदा के 1000 विद्यालयों ने वर्षा जल संरक्षण को अपनाया। इसी कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी ने साधारण व्यक्तित्व वाले 84 वर्षीय श्री कामेगौड़ा जी के बारे में भी बात की जो अपने अतुलनीय योगदानों के कारण देश भर में जल संरक्षण हेतु प्रेरणा का स्रोत बन गए हैं। श्री कामेगौड़ा जी पिछले 40 सालों से अकेले ही जल संरक्षण का कार्य कर रहे हैं और अभी तक 16 तालाबों का निर्माण कर चुके हैं जिस कारण उन्हें 'मैन ऑफ पोंड्स' की भी उपाधि दी गई है। जल चर्चा के इस संस्करण में जल योद्धा लेख द्वारा हम इन्हीं की कहानी आप तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। हमारे विभाग द्वारा शुरू की गई पहल 'कैच द रेन' इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

यह कहना गलत नहीं है कि जब जल संरक्षण की बात की जाती है तो इसमें जन भागीदारी का भाव और महत्ता निहित होती हैं, इसी जन भागीदारी का एक बेहतरीन उदाहरण हम इस संस्करण में पेश कर रहे हैं। इस बार की नदी जीर्णोद्धार श्रृंखला में हमनें घरार नदी को शामिल किया है जिसके पुनरुद्धार का कार्य श्रमिकों के श्रमदान से हुआ है। इसी कड़ी में हम आंध्र प्रदेश के कोंडामानयुनिपालम गाँव में रिज टू वैली अप्रोच से जल संरक्षण की भी जानकारी आपके साथ साझा कर रहे हैं। इस माह की 'वाटर टॉक' में पर्यावरण उद्यमी श्री अरुण कृष्णमूर्ति जी ने जल संरक्षण व प्रबंधन में सामुदायिक श्रम के महत्व के बारे में बात की। उन्होंने 'हाइड्रोस्तान' जैसी दिलचस्प अवधारणा से हमें परिचित कराया और साथ ही साथ अत्यंत प्रेरणादायी 'हाइड्रो-स्टोरीज' भी हमारे साथ साझा की।

जल चर्चा के इस अंक में उन 'गंगा प्रहरी' और 'गंगा मित्र' के भी कार्यों को शामिल किया गया है जो कोरोना संकट के इस कठिन समय में भी गंगा को स्वच्छ बनाने हेतु जागरुकता फैला रहे हैं। इन प्रशिक्षित स्वयंसेवकों ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित व्यापक वृक्षारोपण कार्यक्रम में भी भाग लिया।

पूरे विश्व में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया।कोविड-19 के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इसकी थीम 'योगा फ़ॉर हेल्थ - योगा एट होम' रखी गई थी ताकि लोग घर पर रहते हुए ही योग करें और स्वस्थ भी रहें।

संक्षेप में कहें तो हमने इस संस्करण में जल संरक्षण के क्षेत्र में जन भागीदारी के महत्व को दर्शाने की कोशिश की है। हमें आशा है आप इन अद्भुत कहानियों से अवश्य ही प्रेरित होंगे।

जय हिंद !

शुभेच्छाओं सहित

(उपेंद्र प्रसाद सिंह)

WATER HERITAGES OF INDIA

आमेर की जल विरासत है पन्ना मीना का कुंड

- रियासतकालीन ख़ूबसूरती का बेजोड़ नमूना है आमेर का 'पन्ना मीना का कुंड
- 16वीं शताब्दी में महाराजा जय सिंह के शासनकाल के दौरान हुआ था निर्माण
- अष्टभुजाकार सीढ़ियों के साथ ज़मीनी स्तर से नीचे हैं 8 मंज़िलें

भारत का सबसे बड़ा राज्य 'राजस्थान' देश की अनेक बहुमूल्य धरोहरों का घर है। आज यह न केवल भारत के पर्यटकों के लिए बल्कि विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का मुख्य केंद्र बन गया है। यहाँ के किले देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि यहाँ पर स्थित बावड़ियाँ भी खूबसूरती में किलों से पीछे नहीं हैं। ऐसी ही रियासतकालीन ख़ूबसूरती का बेजोड़ नमूना है 'पिंक सिटी' का 'पन्ना मीना का कुंड'।

यह कुंड राजस्थान के जयपुर में आमेर के किले से केवल 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कुंड से आमेर के किले और अरावली की सुन्दर पर्वत श्रृंखला का नज़ारा देखने को मिलता है। इस कुंड को 'पन्ना मियाँ की नौली' के नाम से भी जाना जाता है। यह भारतीय परंपरागत जल संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका निर्माण 16वीं शताब्दी में महाराजा जय सिंह के शासनकाल के दौरान हुआ था। स्थानीय लोगों का मानना है कि इसका नाम पन्ना मियाँ नाम के व्यक्ति के आधार पर रखा गया है जिसने इस कुंड के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसका निर्माण अवश्य ही नगरीय जलापूर्ति के लिए करवाया गया होगा। पुराने समय में व्यापारी, यात्री और साधु-संत भी इस जगह आ कर विश्राम किया करते थे। उत्तरी दीवार पर बना एक कमरा इस बात का प्रमाण है कि यहाँ सांस्कृतिक व धार्मिक आयोजन भी अवश्य होते होंगे।

इस कुंड का आकार चौकोर है और इसमें जमीनी स्तर से नीचे 8 मंजिलें बनवाई गयी हैं। सबसे नीचे वाली मंजिल पर ही वाटर टेबल है जिसकी वजह से साल भर यहाँ पानी देखने को मिलता है। पहले वर्षा ऋतु के समय यहाँ ऊपर तक पानी भर जाया करता था। इस कुंड में पानी कितना ही नीचे हो, सीढ़ियों की सहायता से पानी तक पहुंचा जा सकता है। कुंड की सीढियाँ ही यहाँ का मुख्य आकर्षण केंद्र है। अन्य बावड़ियों की तरह यहाँ केवल एक तरफ सीढियाँ नही हैं बल्कि चारों दीवारों पर सीढ़ियाँ बनी हैं। ये सीढियाँ देखने में कभी अष्टभुजाकार लगती हैं, कभी टेढ़ी-मेढ़ी नज़र आती हैं तो कभी भूल-भुलैया जैसी लगती हैं। यहाँ तक कहा जाता है कि कोई भी व्यक्ति यहाँ जिस रास्ते से जाता है उससे वापिस नहीं लौटता है क्योंकि ये सीढियाँ भ्रमित करने वाली हैं।

लंबे समय से लगातार नज़र अंदाज़ होने के कारण इसकी रंगत बदल गई थी लेकिन बीते कुछ समय से इसका रखरखाव नगरपालिका द्वारा किया जा रहा है। अब यह कुंड एक बार फिर सुन्दर बन रहा है और लोगों के इन्स्टाग्राम और फेसबुक के लिए फोटोशूट की भी जगह बन रहा है। इस कुंड में कोई प्रवेश शुल्क नहीं है और आप साल में कभी भी यहाँ जा कर इसकी खूबसूरती का लुत्फ़ उठा सकते हैं। यह कुंड एक ऐसा विरासत स्थल है जहाँ प्रकृति के सौन्दर्य के साथ-साथ वास्तुकला और हमारी जल संरक्षण परंपरा का अद्वितीय समागम देखने को मिलता है। यदि आप अगली बार आमेर जाएँ तो इस अद्भुत कुंड को देखना न भूलें।

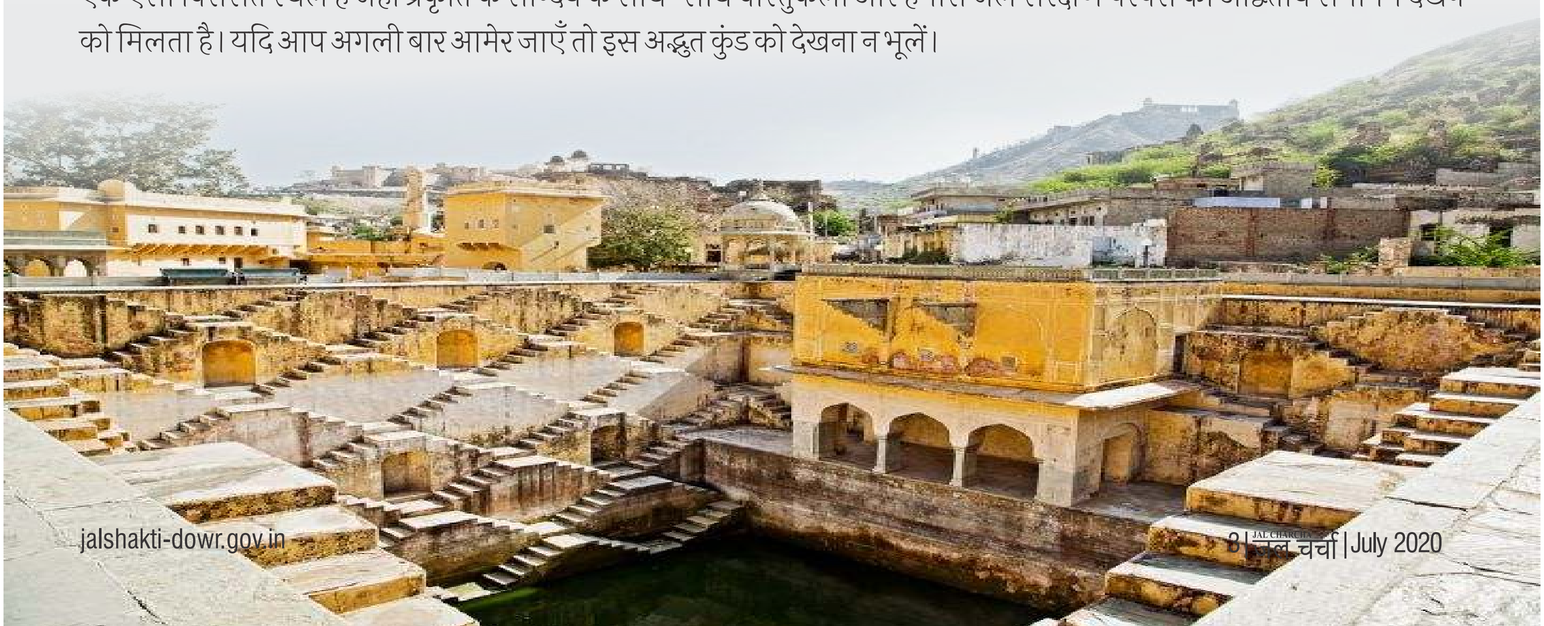

आखिर क्या हैं बारहमासी चंबल नदी की विशेषताएँ

- भारत की पौराणिक नदियों में से एक
- 1,024 किलोमीटर लंबी है चंबल नदी
- यमुना की सहायक नदी
- धौलपुर के निकट स्थित है राष्ट्रीय घड़ियाल अभ्यारण्य

चंबल के बीहड़ मात्र भौगोलिक संरचना ही नहीं बल्कि हिंदी सिनेमा की भी मुख्य विषयवस्तु रहे हैं। दस्यु समस्या के कारण पहचानी जाने वाली चंबल घाटी का नाम आज भी रूह को रोमांचित कर देती है। इस क्षेत्र की प्रमुख नदी चंबल एक पौराणिक नदी है जिसका उल्लेख प्राचीन शास्त्रों में भी मिलता है। चंबल और इसकी सहायक नदियाँ उत्तर-पश्चिमी मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र से निकलती हैं। इसकी सहायक नदी, बनास जिसका उद्गम अरावली रेंज से होता है, दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में बहती है। चंबल नदी, मध्य भारत में यमुना नदी की एक सहायक नदी है और इस तरह यह गंगा बेसिन का भी हिस्सा बनती है।

बारहमासी चंबल नदी की उत्पत्ति मध्य प्रदेश में इंदौर के निकट महू शहर में जानापाव से होती है। लगभग 1,024 किलोमीटर लंबी यह चंबल नदी मध्य प्रदेश में लगभग 376 किलोमीटर और फिर राजस्थान में 249 किलोमीटर का सफर तय करते हुए उत्तर-पूर्वी दिशा में बहती है। इसके बाद यह 216 किलोमीटर मध्यप्रदेश और राजस्थान, तथा 150 किलोमीटर मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के बीच में बहती है। अंत में उत्तर प्रदेश में लगभग 33 किलोमीटर तक बहती है और 122 (above MSL) मीटर की ऊंचाई पर यमुना नदी में मिल जाती है।

चंबल नदी के पानी का उपयोग गांधी सागर बांध, राणा प्रताप सागर बांध और जवाहर सागर बांध में जल विद्युत उत्पादन के लिए एवं कोटा बैराज में सिंचाई के लिए किया जाता है। गांधी सागर बांध राजस्थान-मध्य प्रदेश सीमा पर स्थित चंबल नदी पर बने चार बांधों में से पहला बांध है। यह 64 मीटर ऊंचा चिनाई वाला ग्रेविटी बांध है जिसका निर्माण वर्ष 1960 में पूरा हुआ था। इस बांध पर 115 MW हाइड्रो-पॉवर स्टेशन बना हुआ है।

राणा प्रताप सागर बांध राजस्थान में चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा के पास गांधी सागर बांध के 52 किमी नीचे स्थित है। इसका निर्माणकार्य वर्ष 1970 में पूरा हुआ था और यह चंबल घाटी परियोजनाओं की श्रृंखला का दूसरा बांध है। यह बांध 54 मीटर ऊंचा है।

जवाहर सागर बांध, चंबल घाटी परियोजनाओं की श्रृंखला का तीसरा बांध है जो कोटा शहर के 29 किमी ऊपर और राणा प्रताप सागर बांध के 26 किमी नीचे की ओर स्थित है। यह एक कंक्रीट ग्रेविटी बांध है, जो 45 मीटर ऊँचा और 393 मीटर लंबा है ।

कोटा बैराज, राजस्थान में कोटा शहर के लगभग 0.8 किमी ऊपर स्थित चंबल घाटी परियोजनाओं की श्रृंखला में चौथा है। गांधी सागर बांध, राणा प्रताप सागर बांध और जवाहर सागर बांध में बिजली उत्पादन के बाद छोड़ा गया पानी, कोटा बैराज द्वारा राजस्थान और मध्य प्रदेश में नदी के बाईं और दाईं ओर की नहरों के माध्यम से सिंचाई के लिए छोड़ा जाता है।

चंबल नदी को प्रदूषण मुक्त माना जाता है और इसलिए यहाँ की जैविक विविधता आज भी आकर्षण का मुख्य केंद्र है। यहाँ मगरमच्छों की 2 प्रजातियों - मगर और घड़ियाल, ताजे पानी के कछुओं की 8 प्रजातियां, चिकने-लेपित ऊदबिलाव, गैंगेटिक-डॉल्फिन, स्किमर्स, सारस क्रेन इत्यादि पाए जाते हैं। धौलपुर के निकट चंबल नदी में राष्ट्रीय घड़ियाल अभ्यारण्य बनाया गया है जो कि एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। फ्लोरा और फौना देखने के उद्देश्य से यह स्थल अभी अनछुआ है। प्रकृति से जुड़ाव महसूस करने और घूमने के लिए यह जगह बेहतर सिद्ध हो सकती है।

CONSERVATION

Ridge-to-Valley Approach for Water Conservation through MGNREGA

The frequent dry spells due to subsequent droughts in Kondamanayunipalem village of Anantapur district in Andhra Pradesh resulted in fall of water tables in the region. The majority of the farmers who depended on groundwater for irrigation could not cultivate their lands causing livelihood challenges. Faced with the grave situation, a Gram Sabha meeting was convened to address the problem of water scarcity and it was agreed to develop the village lands using ridge-to-valley approach under MGNREGA. Taking up activities like digging trenches and sunken pits across the slope of hillocks was part of the approach.

Over a period of five years (2014-2018), numerous staggered trenches and sunken pits were dug on about 465 acres of common land along the slopes of the hillocks at a total cost of Rs. 71.24 lakhs (Rs. 70.71 lakhs for wages and Rs. 0.53 lakhs for material). One of the major challenges faced by the workforce was difficulty in digging the hard dry soil under intense heat, which was overcome by the continuous motivation and support of the panchayat officials.

The hard work and patience paid off and the green cover over the barren hillocks increased significantly. About 25 acres of barren land was brought under cultivation downstream. The water levels in 14 old wells and 70 bore wells showed remarkable improvement benefitting as many as 200 households. Fallow lands of some families have now been developed with mango plantation. The farmers are also able to cultivate bottle gourd, tomato, green gram, leafy vegetables, groundnut, etc. inside the mango orchard by intercropping which has doubled their income. The works done under MGNREGA have also ensured livelihood security for poor households. This case study is a perfect example of how resolute action at the grassroots level and good coordination with the government officials can make a big difference in ensuring water and livelihood security in villages.

What is ridge-to-valley approach?

With an intention to conserve every drop of water starting at the ridge and reduce to a considerable extent both the surface run-off volume and the velocity of water, the ridge-to-valley approach seeks to detain, divert, store and use available rainwater. This allows better management of water flowing from the ridge to the valley and ensures conservation of rainwater, which in turn, bring agricultural and economical stability. This approach also helps in strengthening the durability of soil and water conservation structures downstream.

मन की बात

हर महीने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी देशवासियों को आकाशवाणी पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम मन की बात द्वारा संबोधित करते हैं। 'मन की बात 2.0' की 13वीं कड़ी का प्रसारण 28 जून,2020 को हुआ था। माननीय मोदी जी का यह संबोधन कोरोना महामारी के इस संघर्ष वाले समय में आशा की किरण की तरह आया है। इस बार भी उन्होंने कई विषयों पर अपने सकारात्मक विचार देशवासियों के साथ साझा किए जिसमें से जल संरक्षण का विषय भी एक था। श्री मोदी ने संक्षेप में ही देशवासियों को जल प्रदूषण, वर्षा जल संग्रहण, जल संरक्षण के बारे में बताया और साथ ही साथ उन्होंने इस क्षेत्र में कार्यरत लोगों की भी सराहना की।

"साथियो, देश के एक बड़े हिस्से में, अब, मानसून पहुँच चुका है । इस बार बारिश को लेकर मौसम विज्ञानी भी बहुत उत्साहित हैं, बहुत उम्मीद जता रहा है । बारिश अच्छी होगी तो हमारे किसानों की फसलें अच्छी होंगी, वातावरण भी हरा-भरा होगा। बारिश के मौसम में प्रकृति भी जैसे खुद को rejuvenate कर लेती है। मानव, प्राकृतिक संसाधनों का जितना दोहन करता है, प्रकृति एक तरह से, बारिश के समय, उनकी भरपाई करती है, refilling करती है। लेकिन, ये refilling तभी हो सकती है जब हम भी इसमें अपनी धरती-माँ का साथ दें, अपना दायित्व निभाएँ। हमारे द्वारा किया गया थोड़ा सा प्रयास, प्रकृति को, पर्यावरण को, बहुत मदद करता है। हमारे कई देशवासी तो इसमें बहुत बड़ा काम कर रहे हैं।

कर्नाटक के मंडावली में एक 80-85 साल के बुजुर्ग हैं, Kamegowda. कामेगौड़ा जी एक साधारण किसान हैं, लेकिन, उनका व्यक्तित्व बहुत असाधारण है। उन्होंने, एक ऐसा काम किया है कि कोई भी आश्चर्य में पड़ जायेगा। 80-85 साल के कामेगौड़ा जी, अपने जानवरों को चराते हैं, लेकिन, साथ-साथ उन्होंने अपने क्षेत्र में नये तालाब बनाने का भी बीड़ा उठाया हुआ है। वे अपने इलाके में पानी की समस्या को दूर करना चाहते हैं, इसलिए, जल-संरक्षण के काम में, छोटे-छोटे तालाब बनाने के काम में जुटे हैं। आप हैरान होंगे कि 80-85 वर्ष के कामेगौड़ा जी, अब तक, 16 तालाब खोद चुके हैं, अपनी मेहनत से, अपने परिश्रम से। हो सकता है कि ये जो तालाब उन्होंने बनाए, वो, बहुत बड़े-बड़े न हों, लेकिन, उनका ये प्रयास बहुत बड़ा है। आज, पूरे इलाके को, इन तालाबों से एक नया जीवन मिला है।

साथियो, गुजरात के वडोदरा का भी एक उदहारण बहुत प्रेरक है। यहाँ, जिला प्रशासन और स्थानीय लोगों ने मिलकर एक दिलचस्प मुहिम चलाई। इस मुहिम की वजह से आज वडोदरा में, एक हजार स्कूलों में rain water harvesting होने लगी है। एक अनुमान है, कि, इस वजह से, हर साल, औसतन करीब 10 करोड़ लीटर पानी, बेकार बह जाने से बचाया जा रहा है।

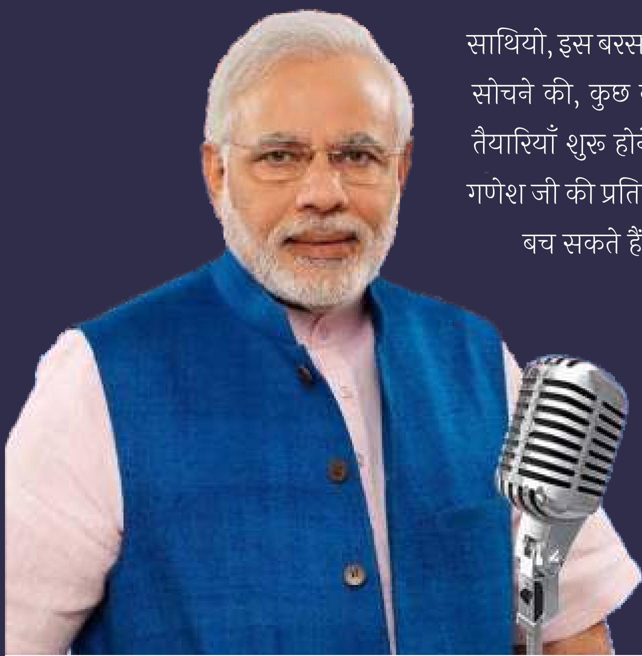

साथियो, इस बरसात में प्रकृति की रक्षा के लिए, पर्यावरण की रक्षा के लिए, हमें भी, कुछ इसी तरह सोचने की, कुछ करने की पहल करनी चाहिए। जैसे कई स्थानों पर, गणेश चतुर्थी को लेकर तैयारियाँ शुरू होने जा रही होंगी। क्या इस बार, हम प्रयास कर सकते हैं कि eco-friendly गणेश जी की प्रतिमायें बनायेंगे, और, उन्हीं का पूजन करेंगे। क्या हम, ऐसी प्रतिमाओं के पूजन से बच सकते हैं, जो, नदी-तालाबों में विसर्जित किये जाने के बाद, जल के लिए, जल में रहने वाले जीव-जंतुओं के लिए संकट बन जाती है। मुझे विश्वास है, आप, ऐसा जरूर करेंगे और इन सब बातों के बीच हमें ये भी ध्यान रखना है कि मानसून के season में कई बीमारियाँ भी आती हैं। कोरोना काल में हमें इनसे भी बचकर रहना है। आयुर्वेदिक औषधियाँ, काढ़ा, गर्म पानी, इन सबका इस्तेमाल करते रहिए, स्वस्थ रहिए।"

श्रमिकों के श्रम से जीवित हुई घरार नदी

- **30 साल से खो चुकी थी अस्तित्व**
- **शहरों से लौटे श्रमिकों ने किया जीर्णोद्धार**
- **2 किलोमीटर तक पुनर्जीवित हो चुकी है घरार**

नदियाँ मनुष्य के जीवन में कितनी महत्वपूर्ण होती हैं, यह तो हर मनुष्य जानता है। यह भारत का सौभाग्य है कि वह इन जीवनदायिनी नदियों का घर कहलाता है लेकिन इन सब में दुखद यह है कि यहाँ कई नदियाँ ऐसी भी हैं जो लुप्त होती जा रही हैं। इन लुप्तप्राय नदियों में से एक घरार नदी भी है जो मध्य प्रदेश के जंगलों से होती हुई बागेन नदी में जा कर मिलती है। यह नदी बीते 30 सालों से लगातार अपना अस्तित्व खोती जा रही थी। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि एक समय पर इस नदी की चौड़ाई कम से कम 40 से 50 फीट हुआ करती थी लेकिन देखते ही देखते अब इसका स्वरुप कई नालों से भी बदतर हो गया है। वर्तमान में कोरोना महामारी के चलते शहरों से वापिस आए प्रवासी मजदूर इस नदी के लिए आशा की किरण बन गए हैं। इन श्रमिकों की मेहनत और लगन के कारण यह लुप्तप्राय नदी एक बार फिर कलकल बहना शुरु कर चुकी है।

हमने आपको पहले भी बताया है कि यदि पलायन करती श्रमशक्ति को गाँवों में सुनियोजित ढंग से इस्तेमाल किया जाए तो गाँवों का स्वरुप बदला जा सकता है। घरार नदी का जीर्णोद्धार उसी सुनियोजन का एक उत्तम उदाहरण है। घरार नदी मध्य प्रदेश में 130 किलोमीटर और उत्तर प्रदेश में 70 किलोमीटर तक बहने के बाद ही बागेन में मिलती है। रखरखाव और साफ़-सफाई में लापरवाही के कारण ही इस नदी की दुर्दशा हुई थी जिस कारण लोग यहाँ से धीरे-धीरे पलायन करने लगे। करतल क्षेत्र के भंवरपुर के पास से तो यह नदी लगभग पूरी तरह ही लुप्त हो गयी थी। जो लोग कृषि के लिए मुख्यतः इस नदी के जल पर ही आश्रित थे उनके लिए इस नदी का विलुप्तप्राय हो जाना रोज़ी-रोटी के खत्म होने जैसा ही था। अब जब भंवरपुर के ये श्रमिक अपने घर लौटे तो उन्हें कृषि के अतिरिक्त जीवनयापन का कोई और माध्यम दिखाई नहीं दिया। कृषि के लिए जल की आवश्यकता थी तो इन श्रमिकों ने ही इस नदी को साफ़ कर के पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठा लिया।

श्रमिकों ने रोज़गार के अभाव में इस नदी को लगभग 2 किलोमीटर तक पुनर्जीवित कर दिया है। इसका जीर्णोद्धार करने के लिए सबसे पहले इस नदी में उग आई जंगली झाड़ियों को काटा गया जिस कारण पुराने जल स्त्रोत खुल गए और नदी में फिर से पानी आने लगा। इस सफलता के कारण इन श्रमिकों के हौंसले और बुलंद हुए और फिर आस-पास के गाँवों में रहने वाले लोगों ने भी इस में अपना श्रमदान दिया। इन श्रमिकों के भोजन की व्यवस्था भी गाँव में रहने वाले अन्य लोगों ने ही की। अब जब यह नदी पानी से लबालब भर रही है ऐसे में आशा है कि ये श्रमिक रोज़गार के लिए शहरों के मोहताज नहीं रहेंगे। श्रमिकों द्वारा घरार नदी के जीर्णोद्धार की यह पहल अत्यंत सराहनीय है और इससे भविष्य में न केवल ये श्रमिक बल्कि आस-पास के कई अन्य गाँव भी लाभान्वित होंगे।

फोटो: अनिल सिंदूर

औरंगाबाद PMKSY – किस्सा कामयाबी का

- **औरंगाबाद के 5 प्रखंडों में सफल वाटरशेड प्रबंधन कार्यक्रम**
- **यात्री शेड निर्माण से 300 परिवारों को लाभ**
- **गाँवों में कृषि के साथ मत्स्य पालन व्यवसाय में विस्तार**

भारत के लगभग सभी राज्यों में केंद्र सरकार के भूमि संसाधन विभाग द्वारा प्रायोजित वाटरशेड प्रबंधन कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य जल, जंगल, जमीन, जन एवं जानवर के विकास के साथ-साथ कृषकों एवं अन्य ग्रामवासियों के लिए बेहतर कृषि और स्थायी जीविकोपार्जन संसाधनों का विकास एवं विस्तार करना है। इसके तहत ही औरंगाबाद जिले में समेकित वाटरशेड प्रबंधन कार्यक्रम पांच प्रखंडों क्रमशः नवीनगर, रफीगंज, कुटुंबा, देव एवं मदनपुर में क्रियान्वित कराया जा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत इन गाँवों में प्रवेश मूलक, समता वर्धक, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, जीविकोपार्जन एवं कृषि उत्पादन कार्यकलापों का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

प्रवेश मूलक गतिविधि के अंतर्गत ग्राम मेहिया, इटवाँ एवं रहम बिगहा, पंचायत बसडिहा एवं परता प्रखंड नवीनगर एवं कुटुंबा में यात्रियों के ठहरने हेतु एक यात्री शेड का निर्माण किया गया है जिसके परिणाम स्वरूप इस गांव के 300 परिवार लाभान्वित हुए हैं। इस शेड का उपयोग यहां के लोग बैठक के रूप में भी कर रहे हैं। प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन गतिविधि के अंतर्गत रफीगंज प्रखंड के बधौरा पंचायत, खैरी इटवाँ, खैरा मनोरथ, एवं बक्शी बिगहा में एनआरएम कार्यों की सफलता के कारण कृषकों की स्थिति बदल चुकी है। इन गाँवों के पोषक क्षेत्रों में एसडीडी का निर्माण किया गया है। इस निर्माण के पश्चात किसान रबी फसलों की खेती प्रारंभ कर चुके है। किसानों को यह बांध बन जाने के बाद 22 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हुई है। इस बांध के निर्माण का लाभ अभी तक 120 परिवारों को मिला है।

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन गतिविधि के अंतर्गत बधौरा पंचायत

के चंद्राही, बक्शी बिगहा, बधौरा, ईगोनी एवं इटवाँ गाँवों में तालाब निर्माण का कार्य भी किया गया है। इन संरचनाओं का निर्माण ड्रेनेज लाइन के लोअर रीच वाले इलाकों में किया गया है ताकि वर्षा का अधिकतम पानी संचित किया जा सके। इस पंचायत क्षेत्र में कुल 5 तालाबों का निर्माण कराया गया जिसके फलस्वरूप 16 हेक्टेयर भूमि में रबी फसल की शुरुआत हो चुकी है। यहाँ के लोग प्रारंभ में केवल वर्षा आधारित एकल फसल की ही खेती किया करते थे लेकिन तालाब निर्माण के बाद से किसान इन तालाबों में मत्स्य पालन का कार्य भी कर रहे हैं और कई ग्रामवासी अब इसे जीविकोपार्जन हेतु मुख्य व्यवसाय के रूप में अपना रहे हैं।

जल योद्धा हैं मैन ऑफ़ पोंड्स – श्री कामेगौड़ा

विश्व में जल संकट की विकटता को देखते हुए पूरी मानवजाति मिलकर श्रम कर रही है। इनमें से कुछ मनुष्य ऐसे भी हैं जो अन्य लोगों से हटकर ना केवल अपने लिए बल्कि समुदाय के लिए जल संरक्षण करने का प्रयास कर रहे हैं। जल शक्ति मंत्रालय ऐसे ही लोगों की पहचान 'जल योद्धा' के रूप में करता है। हर अंक की तरह जल चर्चा के इस अंक में भी हम आपको एक ऐसे जल योद्धा से परिचित कराने जा रहे हैं जो अपने अत्यंत साधारण व्यक्तित्व के बावजूद भी देश भर में अद्वितीय पहचान पा रहे हैं। जल संरक्षण के इस सफर में उनकी आयु, शिक्षा या आर्थिक संसाधन भी कभी अड़चन नहीं बने। हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का भी ध्यान उन्होंने अपनी ओर आकर्षित किया था।

- **84 वर्षीय कामेगौड़ा जी 40 साल से जल संरक्षण का कार्य कर रहे हैं**
- **अभी तक अकेले ही कर चुके हैं 16 तालाबों का निर्माण**
- **माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने मन की बात में देशवासियों को दिया था इनका उदाहरण**

हम बात कर रहे हैं 84 वर्षीय श्री कामेगौड़ा जी की, जो कर्नाटक के दासनाडोडी के रहने वाले हैं। इन्होंने हाल ही में 'मन की बात' के 66वें अंक में श्री नरेंद्र मोदी जी से अपने काम के लिए खूब तारीफें बटोरी हैं। कामेगौड़ा पेशे से एक चरवाहे हैं और जल संरक्षण के क्षेत्र में पिछले 40 वर्षों से काम कर रहे हैं। ये अकेले ही 16 तालाबों का निर्माण कर चुके हैं। इन्हें 'मैन ऑफ पोंड्स' के नाम से भी जाना जाता है। ये प्रतिदिन सुबह 5 बजे से 9 बजे तक तालाब निर्माण का कार्य करते हैं और फिर 9 बजे से शाम 7 बजे तक भेड़ों को चराते हैं। इन से बात करने पर पता चलता है कि इनके इस जल संरक्षण कार्य के पीछे प्रेरणा, एक तरह से जीव-जंतु ही हैं। ये बताते हैं कि जब 40 साल पहले एक दिन वे हमेशा की तरह भेड़ों को चराने कुंदन पर्वत पर गए थे तो उन्होंने ध्यान दिया कि वहां जीव-जंतुओं के लिए कोई जल स्रोत नहीं है और वे प्यास से इधर-उधर भटक रहे हैं। उसी दिन इन्होंने इस समस्या का निदान करने का फैसला लिया।

इनकी मेहनत के कारण अब इस पर्वत की रंगत कुछ और ही है। कामेगौड़ा जी ने यहां 16 तालाब बनाए हैं और इन्हें एक-दूसरे से जोड़ा भी है ताकि तालाबों का अतिरिक्त जल व्यर्थ ना हो और दूसरे तालाबों में प्रवाहित हो जाए। जब इन्होंने तालाब निर्माण का कार्य शुरू किया तो ग्राम वासियों को लगा कि यह इंसान तो पागल ही हो गया है और उन्होंने इनसे दूरी बनानी शुरू कर दी लेकिन इसके बावजूद भी वे अपने लक्ष्य से भटके नहीं। इनके लिए धन एक समस्या जरूर थी पर इन्होंने धीरे-धीरे अपनी भेड़ें बेचकर तालाब निर्माण का कार्य जारी रखा। उनका यह पुरुषार्थ उनके निस्वार्थ और कर्मठ व्यक्तित्व को चरितार्थ करता है।

इन्होंने इस पूरे इलाके को और हरा-भरा करने के लिए यहां वृक्षारोपण का कार्य भी किया है। इन्हें कर्नाटक सरकार द्वारा लाइफटाइम फ्री बस पास भी दिया गया है ताकि इन्हें कहीं भी जाने में कोई समस्या ना हो। वर्ष 2018 में श्री कामेंगौड़ा को अति प्रतिष्ठित राज्योत्सव पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

श्री कामेगौड़ा जी सच्चे मायने में देश के हर नागरिक के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। वे इस तथ्य का साक्षात उदाहरण है कि यदि लक्ष्य निर्धारित कर लिया जाए तो उसे पूरा करने में आयु, पैसा, शिक्षा कुछ भी अड़चन नहीं होती हैं, बस निष्ठा सच्ची और उद्देश्य नेक होना चाहिए। यदि वे भी चाहते तो भेड़-बकरी बेचकर लाखों रुपए जमा कर सकते थे, बड़ी-बड़ी जमीन खरीद सकते थे पर उन्होंने समाज और मानव हित का कार्य करने का निर्णय लिया। श्री कामेगौड़ा जी अन्य लोगों को प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि 'मानव जाति की सेवा ही वास्तव में ईश्वर की सेवा है, इसलिए हर मनुष्य को जीवन में कम से कम एक बार तो दूसरों के लिए कुछ अच्छा कार्य करना ही चाहिए'।

WATER TALK

The 14th Water Talk

The 14th Water Talk was organized by National Water Mission on 26th June 2020 on a virtual platform in partnership with Water Digest. Shri Arun Krishnamurthy, Founder, Environmentalist Foundation of India (EFI) delivered the Talk. Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti, officers from various organizations of the Department and more than 500 participants from various other organizations attended the Talk.

Shri Arun Krishnamurthy who spoke on 'Citizens in Lake Conservation, India Sets a Global Agenda in Water Conservation' emphasized on the need to promote and spread positive news around the efforts being made by individuals and stakeholders working for the preservation of the environment. He shared with the attendees some of the positive water stories of stakeholders and individuals, which he called hydro stories, who have made remarkable efforts in conserving neighborhood lakes and ponds across the country.

Shri Krishnamurthy stressed on the need for science-based collaborative efforts with a futuristic approach and his Talk revolved around a few case studies on revival of water bodies by collective efforts of the people. The first such case study was that of the Manimangalam lake, a historic water body in south-west Chennai. The 900-year-old lake has been transformed into a reservoir through tremendous efforts put by the Government of Tamil Nadu to restore this lake. He then shared the story of Bomanakatte lake of Shimoga in central Karnataka. The lake which once was feeding farmlands and had fresh water became a dumping ground for garbage. Shri Krishnamurthy shared that a collective campaign was undertaken in collaboration with government, donors and participation from public. A restoration plan was redrawn keeping in mind the geographical aspect, human consumption, marine life, animals and birds dependent on the water bodies.

He repeatedly emphasized that our water bodies have stories to tell and talked about the concept of 'Hydrostan'.

Shri Krishnamurthy was of the view that a calamity or a period of distress give opportunity for a new age innovation. Taking up the case study of the Karruppankulam in north-west Chennai, he said that Chennai was struck by one of the worst droughts. At the time, an abandoned water body was taken up for restoration. An innovative effort was made through circular recharge pit to ensure recharging of aquifers. With his stories, he demonstrated that citizen partnership can make all the difference in restoration of water bodies.

Shri Krishnamurthy said that India is country which cares for its water bodies and urged people to participate in water conservation activities. He also requested those who are already working for water conservation to motivate others by sharing their experiences on social media platforms. He suggested that all citizens come together and proactively participate in the cause by taking responsibility towards India's water bodies.

Shri U.P. Singh thanked the speaker for his valuable inputs on pond and lake restoration. Citing the examples of step wells, Shri Singh stated that the structures were not only seen as water storing reservoirs but acted as a marker of civilization in the areas with historical significance. He laid emphasizes on source sustainability and drew examples of NGOs and individuals doing great work in reviving traditional water bodies in various parts of the country

जल प्रबंधन और समृद्धि का परिचायक - ओंकारेश्वर बांध

देश के सभी हिस्सों में वर्षा की मात्रा समान नहीं है और ज़्यादातर भागों में मानसून वर्ष में केवल 3 से 4 महीने तक ही सीमित होता है। सीमित वर्षा-जल और सतही जल प्रवाह को देश के सभी हिस्सों में हर संभव तरीके और साधनों के माध्यम से संरक्षित करने की आवश्यकता है ताकि वर्ष भर जल की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। एक बड़े जलग्रहण क्षेत्र से प्राप्त वर्षा जल को बांधों, जलाशयों और अन्य जल निकायों के माध्यम से संग्रहित किया जा सकता है। मध्य प्रदेश में ओंकारेश्वर बांध ऐसे उदाहरणों में से एक है जो राज्य में जल संसाधनों के संरक्षण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

- **मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में नर्मदा नदी पर निर्मित बाँध**
- **ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर के ठीक ऊपर और इंदौर से लगभग 77 किमी की दूरी पर स्थित है यह बाँध**
- **जल संसाधन संरक्षण एवं विकास में है इसकी महत्वपूर्ण भूमिका**

ओंकारेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना का निर्माण मध्य प्रदेश में जिला खंडवा के ग्राम मानधाता के पास नर्मदा नदी पर किया गया है। बांध स्थल ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर के ठीक ऊपर और इंदौर से लगभग 77 किमी की दूरी पर स्थित है। बांध की ऊंचाई 64 मीटर व लंबाई 949 मीटर है।

इस परियोजना में 1,46,800 हेक्टेयर सीसीए (वार्षिक सिंचाई 2,83,324 हेक्टेयर) की सिंचाई करने के लिए गेटेड स्पिलवे के साथ कंक्रीट बांध के निर्माण और 520 मेगावाट (65 मेगावाट की 8 इकाइयों) की स्थापित क्षमता के साथ जल विद्युत उत्पादन की परिकल्पना की गई है। डिज़ाइन की गई स्पिलवे क्षमता 88315 क्यूमेक है। इस परियोजना को मध्य प्रदेश के खंडवा, खरगोन, बड़वानी और धार जिलों में सिंचाई प्रदान करने के लिए बनाया गया है। इसने खाद्य और अन्य फसलों में 6.31 लाख टन वार्षिक अतिरिक्त उपज का योगदान दिया है। इस अतिरिक्त खाद्य और अन्य फसलों का वार्षिक मूल्य 33.65 करोड़ रुपये है।

तत्कालीन जल संसाधन मंत्रालय के विभाग की तकनीकी सलाहकार समिति द्वारा ही इस परियोजना को मंजूरी दी गई थी और यह परियोजना 1993 में शुरू की गई। इस परियोजना से हाइड्रो पॉवर का दोहन करने के लिए, यूनिट I - डैम और यूनिट III - पावरहाउस का निर्माण कार्य एनएचपीसी (NHPC) और मध्य प्रदेश सरकार की संयुक्त उद्यम कंपनी नर्मदा हाइड्रोइलेक्ट्रिक डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (NHDC) को सौंप दिया गया। मध्य प्रदेश में बांध और पावरहाउस का काम वर्ष 2003-04 में शुरू किया गया था और सभी 8 (आठ) इकाइयों (65 मेगावाट प्रत्येक) के कमीशन के साथ यूनिट III पावर हाउस पर भी काम पूरा हो गया है। यह बाँध निश्चित तौर पर भारत के दर्शनीय स्थलों में से एक है।

PEOPLE'S INITIATIVE

तस्वीर में दिखाई गई जल शुद्धीकरण की पद्धति का आविष्कार उत्तर प्रदेश के जिले मेरठ के रहने वाले श्री इंद्रजीत ने किया है। यह विधि न केवल जल को स्वच्छ करती है बल्कि जलभराव की समस्या का भी निवारण करती है जिस कारण साफ-सफाई भी बनी रहती है। साथ ही इस विधि से हजारों लीटर पानी की बचत होती है। उदाहरण के तौर पर इस विधि की सहायता से घरों में उपयोग किए गए जल को साफ कर के पुनरुपयोग में लिया जा सकता है। स्वच्छ जल को सिंचाई, मत्स्य पालन, वाहनों की धुलाई एवं भवन निर्माण जैसे कार्यों हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इस जल को बोर द्वारा भूमि में पहुंचाकर भूजल स्तर भी बेहतर किया जा सकता है। इससे निकलने वाले जैविक कचरे को खाद के रूप मे प्रयोग कर सकते हैं।

वन महोत्सव सप्ताह के दौरान मेरठ के एनवायरमेंट क्लब के सदस्यों ने अपने अभियान "चलो मिलकर एक पौधा रोपें" के तहत वृक्षारोपण किया। क्लब के सदस्यों ने प्राथमिक विद्यालय गांव खड़ौली, रोहटा रोड के प्रांगण में कटहल, कनेर, अमरूद आदि के पेड़ लगाए एवं आसपास के लोगों को हरियाली लाने हेतु एक पेड़ लगाने को प्रेरित किया।

ग्रीन टाइगर्स बैतूल ने पौधा रोपण और जल संरक्षण कार्यो के प्रगति पथ पर हरितग्राम अभियान के अंतर्गत शहरी क्षेत्र से लगे गाँवो में हरियाली बचाए रखने हेतु 3 किमी तक 301 पौधे लगाये। जिसके अंतर्गत नीम, पीपल, गुलहर और अन्य पौधों का रोपण किया गया।

PEOPLE'S INITIATIVE

बिहार के राजेश कुमार सुमन ने पर्यावरण जन जागरूकता के लिए एक अनोखी पहल की शुरुआत की है। सुमन अपनी पीठ पर पेड़ बाँधकर घूमते है ताकि वे सभी को पेड़ और पर्यावरण का महत्व समझा सकें।

स्वस्थ जीवन जीने के लिए थोड़ा प्रयत्न तो करना पड़ता है और स्वस्थ जीवन निर्भर करता है स्वस्थ पर्यावरण पर। पर्यावरण को स्वस्थ रखने के लिए 'रीयूज़' एवं 'रीसाईकल' को अपनाना बहुत आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए वृक्षम् फाउंडेशन, बांसवाड़ा के सदस्यों ने घर पर वेस्ट डिस्पोज़बल और पुरानी बोतलों में तैयार आयुर्वेद अमृता, गिलोय और एलोविरा जैसे पौधें लगाने के लये लोगों में जागरुकता फैलाई।

Feedback

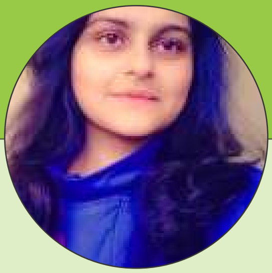

I m very thankful and happy that you are doing such an amazing job in conservation of water. I got very inspired after reading this.

Name-Megha Ratti
Class-10+2 Medical
From-KMV Collegiate
Senior Secondary School, Jalandhar.

The magazine is as interesting as its name! The articles, contests and the poetry, everything about "Jal Charcha" is truly inspirational. It motivates as well teaches methods of water conservation.

Name- Babita
Lecturer in English
Kanya Maha Vidyalaya Jalandhar, Punjab.

Namami Gange

The World Bank and the Government of India signed a loan agreement on 7th July 2020 to enhance support for the Namami Gange programme. The Second National Ganga River Basin Project will help stem pollution in the iconic river and strengthen the management of the river basin which is home to more than 500 million people. The $400 million fund comprises a loan of $381 million and a proposed Guarantee of up to $19 million. The agreement for the loan was signed by Shri Sameer Kumar Khare, Additional Secretary, Department of Economic Affairs, Ministry of Finance on behalf of the Government of India and Shri Qaiser Khan, Acting Country Director (India), on behalf of the World Bank. Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG) said that the 2nd NGRBP will retain momentum gained by Namami Gange mission and would help in benchmarking global standards in river rejuvenation. He complemented everyone for meeting this deadline as planned, in spite of COVID 19.

World Croc Day, also known as World Crocodile Day, was observed on 17th June 2020. The Day is being observed since 2017 as some of the species like gharials have been listed as critically endangered on the IUCN Red List since 2007. The oldest known depictions of the gharial are about 4,000-years-old and were found in the Indus Valley. Hindus regard it as the vehicle of the river deity Ganga. To mark the occasion, about 200 breeding adult crocodile were left in River Ganga.

Eco-skilled Ganga Mitras raised awareness about adverse affects of use of plastics, waste management, afforestation etc. at Assi ghat in Varanasi. The Ganga Mitras volunteers also made people aware of importance of wearing mask in times of Covid-19. Ganga Mitras are trained volunteers for the creation of proper awareness about River Ganga and assist in Ganga Rejuvenation programme.

A detailed proposal to declare Haiderpur Wetland and surrounding area of around 18,000 acre in Muzaffarnagar as a Ramsar site has been sent to the Uttar Pradesh government. Haiderpur clearly qualifies on 5 parameters out of 10, making a very strong case for the declaration. Very recently a bunch of deer was spotted in the area making it a magnificent sight to behold.

A massive plantation drive was carried out by Uttar Pradesh government on 5th July 2020 wherein about 25 crore saplings were planted on the banks of important rivers including Ganga. National Mission for Clean Ganga (NMCG) also participated in the drive through Ganga Praharis who contributed to the cause by carrying out plantation in Varanasi, Bulandshahar, Kannauj etc. during the Van Mahotsav. Ganga Praharis are self-motivated and trained volunteers from among the local communities working for biodiversity conservation and cleanliness of the Ganga River with the ultimate objectives of restoring *Nirmalta* and *Aviralta* of Ganga. The volunteers of Nehru Yuva Kendra Sangathan (NYKS) also took up plantation drives in areas along River Ganga like Farrukhabad etc.

In an interactive webinar organised by the New Indian Express (NMCG being the presenting partner), Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti conversed with Shri Prabhu Chawla, Editorial Director, the New Indian Express and Ms. Kaveree Bamzai, Author and Journalist on 'Rejuvenation of Rivers: Generating Clean Water and Post Covid Challenges an Expectations' on 26th June 2020. Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG) also took part in the session.

27 जून को श्री उदय राज सिंह, अपर सचिव पेयजल/कार्यक्रम निदेशक, राज्य परियोजना प्रबंधन ग्रुप व श्री हर सिंह बोनाल, वित्त निदेशक, राज्य परियोजना प्रबंधन ग्रुप, नमामि गंगे उत्तराखंड द्वारा हरिद्वार में Namami Gange के तहत गतिमान परियोजना 'हर की पैड़ी का जीर्णोद्धार' का स्थलीय निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम निदेशक द्वारा कार्यदायी विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि आगामी वर्ष 2021 में हरिद्वार में आयोजित होने वाले महाकुम्भ के दृष्टिगत कार्यों को उच्च गुणवत्ता के साथ तय समयसीमा में पूर्ण कर लिए जाएँ।

Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, NMCG reviewed the progress of various projects with INTACH on 2nd July 2020. He complimented INTACH for doing good work.

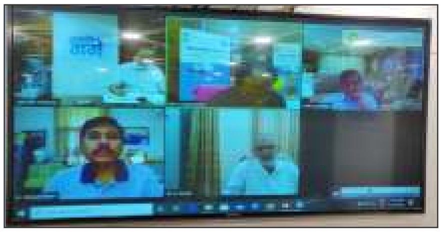

Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti presided over a training webinar on rain water harvesting and artificial recharge structure, organised by National Water Mission on 19th June 2020. Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, NMCG and Shri D.P. Mathuria, Executive Director (Tehcnical), NMCG, participated in the session.

Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, NMCG launched the pocket book on health and safety for sanitation workers titled 'The Story of Malasur: The Demon of Defeca' as part of the Malasur campaign on 19th June 2020.

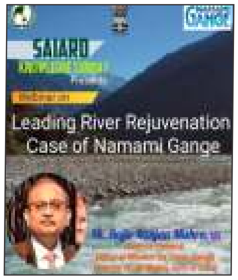

Sh. Rajiv Ranjan Mishra, Director General, NMCG presented his views on 'Leading River Rejuvenation - case of Namami Gange' on 14th June 2020 in the lecture series 'SAIARD Knowledge Sunday' organised by South Asian Institute for Advanced Research and Development (SAIARD).

Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG) and the water experts from across the globe discussed 'Reuse of Water in the Post COVID-19 Era – Insights on Opportunities Ahead' in a webinar organised on 19th June 2020. The participants included Ms. Henriette Faergemann, First Counsellor & Head of Section, European Union Delegation to India, Ms. Birgit Vogel, Project Manager, Implementation support to the India-EU Water Partnership, GIZ India, Rajneesh Chopra, Global Head - Business Development VA Tech Wabag, Mr. K P Bakshi, Former Chairman, Maharashtra Water Resources Regulatory Authority, Mr. Yatin Tayalia, Senior Vice President, SUEZ Water Technologies & Solutions and Mr. Jeremy Bird, Water Resource Advisor to the India-EU Water Partnership.

असीरगढ़ का रानी महल और वर्षा जल आधारित कुंड

क्या आप जानते हैं कि असीरगढ़ के किले का जल प्रबंधन तीन तालाबों, कुंडों, नालियों और गंगा-जमुना नाम की दो नहरों पर आधारित रहा है। वैसे तो इतिहास में हमेशा से ही यह किला फौजियों की छावनी के रूप में इस्तेमाल होता रहा है लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि यहाँ एक समय रानी महल भी हुआ करता था। इस रानी महल के बीच में ही एक कुंड भी स्थित है जिसका प्रयोग रानियाँ संभवतः भीषण गर्मी से राहत पाने के लिए करती रही होंगी। वर्षाजल को छत की नालियों के माध्यम से एकत्रित कर के इस कुंड में डाला जाता था। रानी महल के कुंड में नीचे उतरने की व्यवस्था भी की गई है। यह प्रतीत होता है कि रानियों के लिए सदैव पानी की उपलब्धता बनी रहे इसलिये भी इस कुंड की स्वायत्त व्यवस्था की गई होगी।

NEWS IN BRIEF

India and the world observed the International Day of Yoga on 21st June 2020. Due to restrictions in view of Covid-19, the theme set by United Nations for this year was 'Yoga for Health – Yoga at Home'. Led by Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation himself, several officials practiced various yoga exercises at their homes and with their families to mark the occasion.

Dr. Soban Singh Rawat, Scientist D and Deepak Singh Bisht, Scientist B, from Western Himalayan Regional Centre, Jammu conducted the survey in Tawi River catchment of Jammu district to collect spring water samples. The research project is sponsored by the National Mission on Himalayan Studies (Ministry of Environment, Forest & Climate Change).

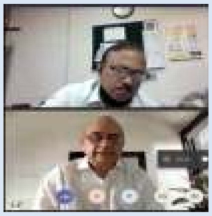

National Institute of Hydrology (NIH) and National Disaster Management Authority (NDMA) organised a two-day virtual second brainstorming workshop on 'Preparation of Guidelines for Management of Glacial Hazards & Risks especially GLOFs & LLOFs on 23rd and 24th June 2020. The workshop was chaired by Shri Sandeep Poundrik, Joint Secretary, Mitigation, NDMA and was attended by 60 participants consisting of task force members and dignitaries of various central ministries including MOEFCC, Ministry of Jal Shakti, Ministry of Mines, DST, IDSP Army, BRO, ITBP, State Disaster Management Authorities of Sikkim, Arunachal Pradesh, Uttarakhand, Jammu & Kashmir, and Himachal Pradesh.

The 35th meeting of Standing Technical Advisory Committee (STAC) of Central Soil and Materials Research Station (CSMRS) was held on 18th June 2020 through video conferencing under the chairmanship of Member (D&R), Central Water Commission. STAC is an advisory body constituted to assist the Governing Council of CSMRS on technical matters. Its main role is to provide an overall technical perspective and guideline to the CSMRS.

A Memorandum of Understanding was signed on 22nd June 2020 between Ministry of Jal Shakti, Ministry of Ayush and Ministry of Agriculture and Farmer's Welfare to cultivate medicinal plants along the banks of River Ganga and also promote organic farming under Namami Gange programme. Recent Atmanirbhar Bharat package for Agriculture gave a boost with huge allocation for medicinal plantation and National Medicinal Plants Board (NMPB) to take up herbal corridors along Ganga. Medicinal plantation in 60 clusters in 180 Gram Panchayats of 10 districts along Ganga in Uttar Pradesh already started by NMCG in collaboration with forest department, Uttar Pradesh and CSIR-CMAP with end-to-end approach of backward and forward linkages.

NEWS IN BRIEF

Shri Amit Shah, Union Home Minister reviewed the flood management measures for top 20 rivers, with a focus on priority areas of Brahmaputra Upper Basin, Indo-Nepal projects, Pancheshwar projects, flood plain zoning and Integrated Reservoir Management on 3rd July 2020 at North Block. Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti also attented the meeting.

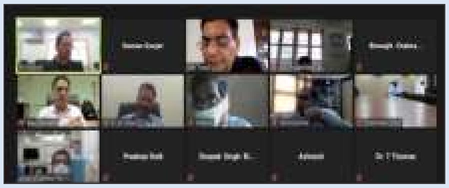

Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation reviewed the work of NIH on 'Water Availability and Integrated Operation analysis of Krishna River Basin' on 8th June 2020. The study was presented by Dr. M K Goel, Scientist G, NIH and total 57 participants from NIH, CWC, CGWB, KRMB, KGBO, Narmada Basin Organization attended the review meeting.

A two-week online training programme on 'Management Aspects and Leadership Traits' was organized by RGNGWTRI for CGWB officers from 26th May 2020 to 6th June 2020. It was the 2nd online training in a row by RGNGWTRI.

Shri G.C. Pati, Chairman, Central Groundwater Board (CGWB) released the inaugural issue of Journal of Geohydrology, an online journal started by Indian National Chapter of International Association of Hydrogeologists (IAH). The online release took place at Bhujal Bhawan, Faridabad on 8th June 2020. Shri Pati also launched the website of IAH, a scientific and educational charitable organisation for scientists, engineers, water managers and other professionals working in the fields of groundwater resource planning, management and protection.

* Dr. Gopal Krishan, Scientist C, delivered an online talk on 'COVID 19 and Challenges in Water Sector' on 12th June 2020 for Abhav Foundation, Atal Bihari Vajpayee Trust, Bilaspur, Chattisgarh.
* Dr. Santosh Pingale, Scientist C, NIH, delivered a talk on 'Integrated Watershed Management: Issues and Challenges' for faculty and students of the Civil Engineering Department, Dehradun Institute of Technology (DIT) University on 19th June 2020.
* Dr. V. C. Goyal, Scientist G, NIH delivered lecture on 'Disaster Risk Management for Water Security through Resilient Water Bodies' on 20th June 2020 organized by IIT Indore and NIDM, New Delhi.
* Dr. R. P. Pandey, Scientist G, NIH lead India-UK Water Centre (IUKWC) webinar on 'Developing an Interactive Web-application to Aid Drought Decision Making in Maharashtra State' on 25th June 2020 . About 115 stakeholders and professionals participated in the webinar.
* Dr. R. Chitra, Scientist 'E', CSMRS, New Delhi delivered a talk on 'Challenges in the Geotechnical Investigations of Hydroelectric Projects' in the 4th Webinar organized by IIT Gandhinagar iGrip (Initiative for Geotechnical Research and Innovative Practices) on 26th May 2020 and a lecture on 'Embankment Dams – Distress and Manifestation' in the 33rd Webinar organized by IGS Guntur Chapter on 24th June 2020.

NEWS IN BRIEF

Groundwater monitoring and water quality sampling for pre-monsoon period was carried out at Sagar district, Madhya Pradesh, Udhampur district, Jammu & Kashmir and NCT of Delhi in the month of June 2020.

Conducting pumping test is an integral part of groundwater exploration activity and for estimating the aquifer parameters. CGWB officers carried out pumping test at Kodapada, Keonjhar District, Odisha on 11th June 2020.

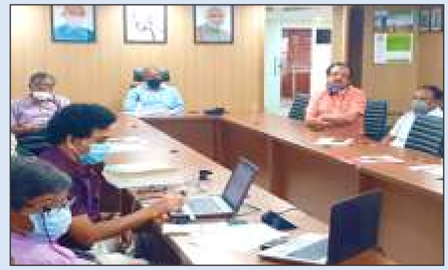

Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation took a meeting through video conferencing on 'Reassessment of Present Water Availability in India' on 3rd June 2020. Shri Sunil Kumar, Director, Basin Planning, Central Water Commission (CWC) made a presentation on the latest water availability studies. The meeting was attended by Smt. Debashree Mukherjee, Additional Secretary, Do WR, RD and GR and other senior officers.

The first preparatory meeting for 'Round Table of River Boards' which is to be convened under the aegis of CPR-CWC Dialogue Forum was held on 19th June 2020 through video conferencing. The meeting took place with Bhakra Beas Management Board (BBMB), Damodar Valley Reservoir Regulation Committee (DVRRC) and Upper Yamuna River Board (UYRB). It was chaired by Shri R.K. Jain, Chairman, CWC. The attendees included Shri A B Pandya, SG, ICID; Member (WP&P), CWC among other senior officers.

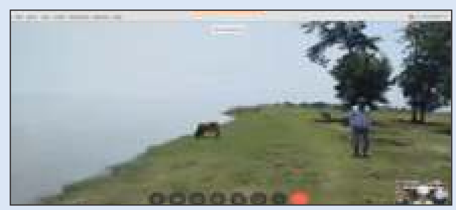

A virtual monitoring visit to Majuli was organised under the chairmanship of Member (D&R), CWC on 9th June 2020. The meeting was attended by the members of the Monitoring Committee from various organizations. Live streaming of all important sites in Majuli where protection works are being carried out was arranged. In the video conference which lasted for about 2 hours, some videos were shown and PPT presentations were made.

Dr. Gopal Krishan, Scientist C, NIH received 'Certificate of Appreciation' from organizing chair of Geoethics and GW Management Congress held in Portugal during 18th to 22nd May 2020. The Congress was jointly organized by International Association of Hydrogeologists (IAH) and International Association for Promoting Geoethics (IAPG).

NEWS IN BRIEF

Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti reviewed the work done by National Institute of Hydrology (NIH) on 'Environmental Flow Assessment for Yamuna River from Hathnikund Barrage to Okhla Barrage' on 3rd June 2020. This work is awarded by NMCG and Dr Anupama Sharma, Scientist F presented the findings of the study.

A training programme was conducted for tailoring, embroidery, sheep rearing, goat rearing dairy farming etc. for women self-help groups of Doddaballapura and Nelamangala blocks of village Amabalagere in Bengalore district of Karnataka during Covid-19 under the livelihood component of Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojana (Watershed Development). Around 35,000 face masks were produced by 4 self-help groups which were sold in the market helping the women to generate some income for their families. The masks were supplied to farmers around the village, gram panchayat, Raitha Samparka Kendras, local hospitals, agriculture produce marketing yards, medical shops etc. The total profit so far stands at around Rs. 1.75 lakhs.

Mrs. Debashree Mukherjee, Additional Secretary, Do WR, RD and GR, Ministry of Jal Shakti chaired a virtual meeting on ongoing collaborations between India and Australia in the National Hydrology Project on 24th June 2020. Shri Subodh Yadav, Joint Secretary (GW and IC) also took part in the meeting.

The virtual monitoring visit to Shahpurkandi Dam project site was organised under the chairmanship of Shri S.K.Haldar, Member (WP&P), CWC on 15th June 2020.

SNIPPETS

PMO India @PMOIndia · Jun 28

Our small efforts can help Mother Nature. They can also help many fellow citizens. #MannKiBaat

PMO India @PMOIndia · Jun 29

कल्याणी के पुनरुद्धार को प्रधानमंत्री ने सराहा।

कल्याणी के पुनरुद्धार को प्रधानमंत्री ने सराहा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात में किया जिक्र, सराहना से नदी के पुनरुद्धार कार्यों को मिलेगा बल

मनरेगा से कल्याणी का पुनरुद्धार शुरू

IPRD Bihar @IPRD_Bihar · May 31
Begusarai : Construction of rooftop rainwater harvesting structures in 30 schools in Begusarai under "jal jeevan hariyali abhiyan" by masons quarantined in those schools.
@Begusarai8

ANI UP @ANINewsUP · Jun 29
Migrant labourers from Barabanki, who have returned to their village amid #COVID19 pandemic and are working here under MGNREGA to restore natural form of Kalyani river, were applauded by PM Modi in his #MannKiBaat yesterday.
ANI
ANI
ANI

Parimal Nathwani @mpparimal · Jun 26
Through services like rainwater harvesting & wastewater management, #Jharkhand startup has helped save 1.5 billion ltrs of #water in 5 years. With an increase in water-stressed cities, this can help battle a great crisis.
@MoJSDoWRRDGR @HemantSorenJMM
thebetterindia.com/230789/water-c...

जन की बात

कोरोना के दौर में मनुष्य और जल संसाधन

आज विश्व का हर देश कोरोना महामारी से जूझ रहा है। हर देश पर इस विभीषिका का प्रकोप अलग-अलग स्तर पर देखने को मिल रहा है। जहाँ करोना की रोकथाम के लिए हाथों को बार-बार साबुन या अलकोहोल आधारित सैनीटाईज़र से साफ़ करना महत्वपूर्ण हो गया है, वही विश्व की 40% आबादी इन बुनियादी सुविधाओं से वंचित है। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि जल संकट की जड़ें ग़रीबी, असमानता, सामाजिक व राजनैतिक प्रधानता (hegemony) से जुड़ी हुई हैं। इसलिए इस संकट से उबरने हेतु वैश्विक सौहार्द तथा समन्वय की दरकार है।

शीरी सिंह भिलाई, छत्तीसगढ़

जीवन के लिए पानी एक बुनियादी मानवीय आवश्यकता है। जिस पानी का उपयोग सभी करते हैं उस पानी के संरक्षण की पूरी ज़िम्मेदारी केवल सरकार पर नहीं छोड़ी जा सकती क्योंकि यह कभी अपने उपभोक्ता के प्रति कोई पूर्वाग्रह नहीं रखता और हर मनुष्य की सुधा शांत करता है इसलिए इसके संरक्षण की ज़िम्मेदारी हर मनुष्य की है। मनुष्य ने पहले ही अपने अज्ञान, लालच और फ़ायदे के लिए कई प्राणियों को धरती से विलुप्त कर दिया है, मनुष्य अगर अब भी नहीं संभला तो वह पानी को विलुप्त होता देखने के लिए जीवित नहीं रहेगा।

COVID-19 के बाद परिस्थितियों में अप्रतिम परिवर्तन देखने को मिलेगा। ऐसे में हमें जल संरक्षण के लिए पहले से बेहतर संरचनात्मक ढाँचे का निर्माण करना होगा। सबसे पहले हमें पानी की खपत को कम करने की कोशिश करनी होगी परंतु यह जल संकट की स्थिति से उबरने के लिए काफ़ी नहीं होगा। अब वह समय आ गया है जब हमें अपरंपरागत जल संसाधनों की तरफ़ रुख करना होगा, इसके तहत भारतवासियों को वर्षा जल संग्रहण की तकनीक में विस्तार करना चाहिये।

अगर हर नागरिक अपनी तरफ़ से छोटे-छोटे परिवर्तन करने का दृढ़ संकल्प ले तो बड़े परिवर्तन बड़ी ही सहजता से आ सकते हैं। जैसे एक जीन्स को बनाने में 10,000 लीटर पानी की खपत होती है, इतना पानी एक व्यक्ति सामान्यत: 10 वर्षों में पीता है, ऐसे में यदि ग्राहक ज़िम्मेदार बने और अपने विकल्पों को समझे तो संसाधनों की बेतहाशा खपत को रोका जा सकता है।

आज हम ऐसे जल संकट से घिरे हुए है जो सभी प्राणियों के अस्तित्व की नीव को कमज़ोर कर रहा है। इस समस्या से निदान पाने के लिए आवश्यक है कि हम जल का विवेकशील उपयोग करें। इससे सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकेगा और आने वाली पीढ़ी भी जल संसाधनों का लाभ उठा पाएगी।

जल शक्ति मंत्रालय
से जुड़ी खबरों की जानकारी के लिए
हमसे जुड़ें:
जल शक्ति मंत्रालय का फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पेज
आज ही फ़ॉलो करें

mowrrdgr
MoJSDoWRRDGR
ministry_of_jal_shakti

लोगों को 'जल समर्थ' बना रहा है समर्थ चैरिटेबल ट्रस्ट

- गुजरात के कच्छ और छतीसगढ़ के कबीरधाम में चलाई जा रही हैं बड़ी मुहिम
- सूखा प्रभावित इलाकों की समस्या का निवारण
- इंडिया डेवलपमेंट एंड रिलीफ फंड के साथ मिलकर बेहतर समाज निर्माण

भारत में जल संरक्षण व इससे जुड़े सभी मुद्दों की महत्ता समय के साथ-साथ लगातार बढ़ रही है। अधिकतर जगहों पर कृषि पूर्णतः वर्षा आश्रित है। कई विशेषज्ञों का मानना है कि भारत में वर्षा की मात्रा में कमी नहीं है बल्कि जल संचयन के साधनों में कमी है। यदि वर्षा जल को संग्रहित किया जाए तो लगातार गहराते जल संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है। जल शक्ति मंत्रालय भी लोगों को वर्षा जल संग्रहित करने की प्रेरणा देता रहा है। अब जब देश के अधिकतर भागों में मानसून आ ही गया है तो वर्षा जल संग्रहण का विषय और भी अहम हो गया है। आज देश में ऐसी कई संस्थाएँ और संगठन हैं जो लोगों को जल संरक्षण के महत्व से परिचित करा रहे हैं और वर्षा जल संग्रहण सिखा रहे हैं।

समर्थ चैरिटेबल ट्रस्ट एक ऐसा ही गैर-लाभकारी संगठन है जो देशवासियों को जल के क्षेत्र में समर्थ बनाने का कार्य कर रहा है। इस ट्रस्ट की स्थापना वर्ष 1992 में हुई थी और तभी से यह ट्रस्ट शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। इनका मुख्य उद्देश्य मानवोचित, न्यायसंगत और समर्थ समाज का निर्माण करना है। इसके लिए वे हाशिए पर खड़े समुदायों को स्वच्छ जल, सैनिटेशन और बेहतर हाइजीन की सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं ताकि वे सामाजिक तौर पर सशक्त बन सकें। यह ट्रस्ट वर्ष 2009 से 'इंडिया डेवलपमेंट एंड रिलीफ फंड' के साथ मिलकर लोगों का जीवन बेहतर करने का कार्य कर रहा है। समर्थ चैरिटेबल ट्रस्ट फिलहाल मुख्य रूप से गुजरात के कच्छ और छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में कार्य कर रहा है ।

कच्छ देश के उन इलाकों में से है जो सूखाग्रस्त इलाकों की श्रेणी में सबसे ऊपर आते हैं। यहां आज भी कई इलाकों में महिलाओं को पानी लाने के लिए 5-6 किलोमीटर दूर चलकर जाना पड़ता है। कई लोग जल की कमी से संबंधित समस्याओं के कारण पलायन का रास्ता चुनते हैं क्योंकि ऐसी परिस्थिति में अच्छी फसल और पशुपालन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इस इलाके की समस्याओं को देखते हुए समर्थ ने यहां के लिए एक विस्तृत 'वाटर सिक्योरिटी प्लान' बनाया है जिससे अभी तक 97 ग्राम लाभान्वित हुए हैं। रापर के इन 97 गांवों में 37 चेकडैम और 12 कुएं बनवाए गए हैं। दरअसल ये सभी इलाके पूरी तरह वर्षाश्रित थे और यहां के गरीब लोग पेयजल के लिए उन जल निकायों पर निर्भर थे जो साल में एक बार वर्षा से ही भरते थे। समर्थ ने इन लोगों को एक बेहतर विकल्प प्रदान किया है जिसका लाभ 52,908 ग्रामवासी उठा रहे हैं। इसके कारण यहां कृषि बेहतर हुई है, पलायन में कमी आई है और लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल मिल पा रहा है।

रापर की ही तरह कबीरधाम के पंडरिया और बडोला, वर्षा की भारी कमी वाले इलाके हैं। यहां पर भी महिलाओं को दूर चल कर पानी लाना पड़ता है। स्वच्छ जल की अनुपलब्धता के कारण यहां के अधिकतर बच्चे गंभीर बीमारियों से ग्रसित रहा करते थे। जल की कमी के कारण कृषि में कमी आ रही थी जिससे बच्चे कुपोषण का भी शिकार हो रहे थे। यहां शिशु मृत्यु दर में लगातार बढ़ोतरी हो रही थी। संक्षेप में कहा जाए तो इलाके की हालत अत्यंत दयनीय थी परंतु समर्थ चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा उठाए गए कदमों ने इन इलाकों की रंगत पूरी तरह बदल दी है। यहां समर्थ द्वारा जगह-जगह पर छत आधारित वर्षा जल संग्रहण ढांचे, चेकडैम और वाटर टैंक बनवाए गए हैं जिनके त्वरित परिणाम देखने को मिले हैं। इस पहल से 1021 आदिवासी परिवारों की जल समस्या का निवारण हुआ है। ट्रस्ट ने गांव के लोगों को जल के दूषित होने के कारण और इसके दुष्प्रभावों से भी अवगत कराया है। ट्रस्ट युवाओं को भी भूजल प्रबंधन की तकनीक सिखाकर उन्हें 'जलदूत' बनाने का कार्य कर रहा है।

यह संगठन लगातार सूखा प्रभावित इलाकों को चयनित कर के वहां की जल समस्याओं का निवारण कर रहा है। समर्थ चैरिटेबल ट्रस्ट वाकई अपने इन कदमों से हाशिए पर खड़े लोगों को जल संरक्षण के क्षेत्र में सशक्त और समर्थ कर रहा है। यह ट्रस्ट पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह हमें सिखाता है कि किस प्रकार हम उपलब्ध संसाधनों से ही जलापूर्ति से जुड़ी समस्याओं को दूर कर सकते हैं।

जल जीवन हरियाली अभियान के तहत मत्स्यगंधा झील पुनरुद्धार

- **23 साल पुरानी मत्स्यगंधा झील**
- **1500 मीटर लंबी और 200 मीटर चौड़ी है यह झील**
- **जीर्णोद्धार से जल संग्रहण क्षमता में 6 लाख घनमीटर वृद्धि**

जल जीवन हरियाली अभियान की शुरुआत बिहार सरकार द्वारा वर्ष 2019, जुलाई में सार्वजनिक जल स्रोतों को अतिक्रमण मुक्त कर, पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से की गई थी। इस योजना में जल निकायों के निकट वृक्षारोपण कराने का निर्णय भी लिया गया था। लघु जल संसाधन विभाग को इसके लिए 1 एकड़ से बड़े रकबा के सार्वजनिक तालाबों तथा आहर/पइन के साथ-साथ छोटी नदियों पर चेकडैम बनवाने का दायित्व सौंपा गया था। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस अभियान के तहत क्रियान्वित योजनाओं में से 1092 योजनाएं तकनीकी रूप से पूर्ण हो गई है और इनसे लगभग 601 लाख घनमीटर जल संचयन क्षमता का सृजन हुआ है। हम आज इसी महत्वकांक्षी अभियान के तहत पुनर्जीवित हुई मत्स्यगंधा झील की कहानी आपके साथ साझा कर रहे हैं।

मत्स्यगंधा झील बिहार के सहरसा जिले के सत्तरकटैया प्रखंड में स्थित है। यह झील 1500 मीटर लंबी और 200 मीटर चौड़ी है। वर्ष 1996 में तत्कालीन जिलाधिकारी टी एन लाल दास द्वारा इस झील का निर्माण व सौंदर्यीकरण कराया गया था। इस जगह का पौराणिक महत्व बताया जाता है किंतु उस समय यह केवल शहर का श्मशान स्थल बनकर रह गया था। श्री टी एन लाल दास ने जब इसका पुनरुद्धार कार्य शुरु किया था तब यह जल निकाय केवल जलकुंभियों से भरा हुआ था। इसे तब साफ कराया गया और इसकी खुदाई करवाई गई। उसी समय यहाँ नौका विहार का भी शुभारंभ कराया गया परंतु समयान्तराल में लापरवाही के कारण यह झील अपने पुराने स्वरुप में ही परिवर्तित हो गई।

यहां धीरे-धीरे गाद व मिट्टी इकट्ठा होने लगी और इसकी गहराई कम हो गई जिस कारण झील की जल संचयन क्षमता लगभग खत्म हो गई। पिछले 2 साल से यह मत्स्यगंधा झील पूरी तरह सूख गई थी लेकिन 'जल जीवन हरियाली अभियान' ने इसके मृतप्राय स्वरुप में जैसे जान सी फूंक दी है। इस अभियान के तहत मत्स्यगंधा झील की गहराई 2 मीटर और बढ़ाई गई है जिस कारण इसकी जल संग्रहण क्षमता में 6 लाख घनमीटर की वृद्धि हुई है। अगले मानसून तक यह झील संभवतः जल से पूरी तरह भर जाएगी और फिर यहाँ साल भर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी। जिला प्रशासन ने मनोरंजन एवं राजस्व प्राप्ति के उद्देश्य से यहां पुनः नाव संचालन का भी निर्णय लिया है।

मत्स्यगंधा झील का जीर्णोद्धार कार्य अभी प्रगति पर है और हमें यह बताते हुए गर्व है कि कार्यस्थल पर कार्यरत मजदूर एवं अन्य कर्मियों द्वारा कोविड-19 संबंधी सभी दिशा-निर्देशों का अनुपालन किया जा रहा है। सभी मजदूर शारीरिक दूरी बनाते हुए कार्य कर रहे हैं और समय-समय पर हैंड सैनिटाइजर का भी प्रयोग कर रहे हैं। जब झील के निकट वृक्षारोपण हो जाएगा तथा इसका पुनरुद्धार कार्य भी पूरा हो जाएगा तब यहाँ अवश्य ही प्रकृति के सुंदर दृश्य के साथ-साथ भूजल स्तर भी बेहतर होगा।

जल जीवन हरियाली अभियान के तहत बिहार के सभी जिलों में युद्ध स्तर पर कार्य चल रहा है। कोविड-19 जैसी गंभीर महामारी भी इस कार्य में रुकावट नहीं डाल पाई है। इस अभियान के कारण ही हम अनेकों जल निकायों के जीर्णोद्धार की जानकारी आपके साथ साझा कर पा रहे हैं और जल चर्चा के आगामी संस्करणों में भी करते रहेंगे।

IN NEWSPAPER

बहुमूल्य पानी को बचाने के लिए सरकार ने बनाई है नई नीति : सीएम मनोहर लाल

सरकारी प्रयासों के साथ-साथ आमजन को पानी बचाने का लेना होगा संकल्प

केंद्रीय राज्यमंत्री ने हथनीकुंड बैराज समेत यमुना नदी क्षेत्र का किया निरीक्षण

गंगा की तर्ज पर स्वच्छ होगा यमुना नदी का जल : कटारिया

कृषि योजनाओं से बिहार का भू-जलस्तर ऊपर आया

ट्वीट

इचाक में पिछले दो सालों से बचाया जा रहा है बारिश का पानी

अब तक 447.32 करोड़ लीटर पानी का किया गया है संचय

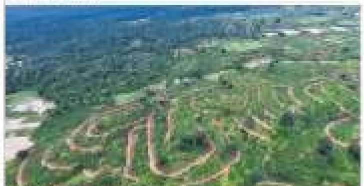

जल संचय से कृषि कार्य को बढ़ावा मिला : बीडीओ

ऐसे किया गया जल संरक्षण

इचाक प्रखंड में कल के लिए आज बचाया जा रहा करोड़ों लीटर बारिश का पानी

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री ने किया हथिनी कुंड बैराज का दौरा

नमामि गंगे परियोजना के 125 प्रोजेक्ट पूरे: कटारिया

कहा, यमुना को भी किया जाएगा स्वच्छ

निरोग रहने के लिए नियमित करें योग

गंगाघाट पर जुटे युवाओं और ग्रामीणों ने योगाचार्य के मार्ग दर्शन में किया योगाभ्यास

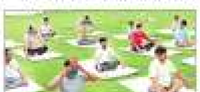

योगा कर रखें निरोगी काया

जगह-जगह हुए योगा के कार्यक्रम

गंगा तट पर योगा करते विभिन्न संस्था के लोग।

ओएसिस इंटरनेशनल स्कूल का बेमिसाल जल संरक्षण

जल चर्चा के पिछले संस्करणों में हमने आपको ऐसे कई विद्यालयों के बारे में बताया है जो लगातार अपने प्रयासों से विद्यार्थियों को जल के प्रति जागरूक बनाने और अपने परिसर में जल संरक्षण के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। इसी दिशा में एक कदम और आगे बढ़ाकर कर्नाटक का एक विद्यालय न केवल अपने विद्यालय में जल संरक्षण कर रहा है बल्कि ऐसे विद्यालयों की भी सहायता कर रहा है जो जल की भारी कमी झेल रहे हैं।

हम सभी इस बात से परिचित हैं कि बेंगलुरु बीते कुछ समय से जल संकट की समस्या से बुरी तरह जूझ रहा है। यह अब जल की कमी वाले शहरों में अग्रणी बना हुआ है। ऐसे में बेंगलुरु का ओएसिस इंटरनेशनल स्कूल जल संरक्षण व इसके प्रोत्साहन के लिए सराहनीय एवं उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। बेंगलुरु के हेन्नूर रोड पर स्थित इसका 3 एकड़ में फैला परिसर पूरी तरह इको फ्रेंडली है। विद्यालय लगातार अपने प्रयासों से विद्यार्थियों के भीतर सौहार्द, प्रेम, आभार एवं आदर जैसे सार्वभौमिक मूल्य पल्लवित करने का प्रयास कर रहा है। इन सभी मूल्यों द्वारा ही पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होने की भावना उत्पन्न होती है।

यह विद्यालय जल संरक्षण के लिए 'Be Wise, Water Wise' नाम का स्टूडेंट लेड प्रोग्राम (SLP) चला रहा है जिसमें सारे कार्यों में विद्यार्थी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रोग्राम का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके सामाजिक दायित्वों से परिचित कराना तथा ग्रामीण इलाकों में पानी की समस्या का निदान करना है। यह प्रोग्राम अभिभावक-शिक्षक-विद्यार्थी मॉडल पर काम करता है जिसमें विद्यार्थियों के अभिभावक और शिक्षक उनका मार्गदर्शन करते हैं और जमीनी स्तर पर सारा कार्य छात्र-छात्राएं खुद करते हैं। इस मॉडल से न केवल विद्यार्थी जागरूक होते हैं अपितु अभिभावक भी इस जागरूकता अभियान का हिस्सा बन पाते हैं।

यह विद्यालय मुख्य रूप से सामुदायिक स्तर पर लोगों को जल संरक्षण व संग्रहण के विषय पर जागरूक करता है ताकि लोगों के भीतर इस गंभीर विषय के प्रति एक व्यावहारिक बदलाव आए और वे स्वयं जल संरक्षण करें और बाकी लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करें। छात्र-छात्राओं की अगुवाई में होने वाले इस अभियान में घर-घर लोगों को जागरूक करने के साथ-साथ सोक पिट्स और रेन गार्डन इत्यादि पर भी काम किया जा रहा है। विद्यालय में हुई एक कार्यशाला में बच्चों को एक्वापौनिक सिस्टम के बारे में भी बताया गया है कि कैसे कृषि की यह तकनीक 90% तक जल की बचत करने में कारगर है। विद्यार्थी अब आसपास के इलाकों में लोगों को इस तकनीक द्वारा कृषि करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

हाल ही में विद्यार्थियों को पता लगा कि उन्हीं के विद्यालय परिसर के पास में एक ऐसा सरकारी स्कूल है जहां बच्चे पानी की कमी के कारण कई असुविधाओं का सामना कर रहे हैं। विद्यालय में लड़कियों के दाखिले में लगातार कमी आ रही है। इस पूरी समस्या को हल करने के लिए ओएसिस ने कई स्तरों पर कार्य किया है। इसमें कई विशेषज्ञों से सलाह ली गई और फिर सरकारी स्कूल के साथ मिलकर इस परिसर में 2 सोक पिट्स बनवाए गए ताकि वॉटर टेबल को एक बार फिर बहाल किया जा सके। इन पिट्स को बनाने में ओएसिस के 8वीं से 12वीं कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अहम भूमिका रही। इन्होंने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म द्वारा ही ₹3.5 लाख की पूंजी इकट्ठा की और इसी से पिट्स बनवाए गए।

- **जल संरक्षण के लिए 'Be Wise, Water Wise' प्रोग्राम**
- **सोक पिट गड्ढों और रेन गार्डन के क्षेत्र में काम**
- **पूँजी जमा कर के सरकारी स्कूल में कराया जल संरक्षण**

ओएसिस इंटरनेशनल स्कूल द्वारा उठाए गए इस कदम की जितनी सराहना की जाए उतनी ही कम है। इस पहल से एक साथ कई लक्ष्यों को प्राप्त किया जा रहा है। जल संरक्षण व जागरूकता के साथ-साथ विद्यार्थियों को यह सिखाया जा रहा है कि जल संकट किसी एक की समस्या नहीं इसलिए किसी एक के द्वारा उठाए गए कदमों से इसका समाधान भी नहीं निकल सकता। अब यह आवश्यक हो गया है कि सभी साथ मिलकर इस क्षेत्र में काम करें और पृथ्वी को पुनः जल समृद्ध बनाएं।

ओएसिस इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने गाँव के जल संकट से निपटने के लिए "Be Wise Water Wise" नाम के अभियान की शुरुआत की।

A beautiful painting of Ganga Avtaran made by Smt. Archana Singh, wife of Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti.

कोरोना की जंग
जल के संग

कोरोना महामारी आई
दुनिया में तबाही मचाई
कोई दवाई काम ना आई
कोरोना महामारी आई
सभी ने एक बात सुझाई
बार-बार हाथ धो लो भाई
गर्म पानी एवं भाप को इलाज बताया
इसमें जल ही काम आया

जल महत्ता फिर समझ आई
जल औषधि है भाई
जल ही नहीं, अमृत है
बचालो यदि अपनो के संग रहना है

कोरोना बीमारी से बचना है
साथ-साथ जल भी बचाना है
क्योंकि जल ही जीने का सहारा है
जल ही प्राण को प्यारा है

जल की बूंद-बूंद बचानी है
जल की कमी भी महामारी है
जरूरत के हिसाब से प्रयोग में लाऊं
दूसरों को भी इसका महत्व बताऊं

सारी जंग जीत जाएंगे
कोरोना को भी हराऐंगे
जल को भी बचाऐंगे
भारत का परचम पूरे विश्व में लहराएंगे।

विनय शर्मा
संपर्क अधिकारी
संसद अनुभाग
जल शक्ति मंत्रालय

Share your suggestions & feedback at media-mowr@nic.in